पंचम अध्याय

वस्तु शिल्प

मानसिक कुण्ठाओं और विकृतियों पर आधारित वस्तु

व्यक्ति प्रमुख का मनोविश्लेषण

कथा का प्रारम्भ

कथा का विकास

उपसंहार

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

पंचम अध्याय

वस्तु शिल्प

इलाचन्द्र जोशी जी ने अपने सभी उपन्यासों में मानव मन का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया है। वाह्य जीवन की विभिन्न समस्याओं के अंकन को महत्व न देकर उन्होंने व्यक्ति के अन्तर्मन में स्थित विभिन्न प्रवृत्तियों का सूक्ष्म विश्लेषण कर उसकी आन्तरिक कुण्ठाओं एवं विकारों को उद्घाटित किया। उनके कथा साहित्य में फ्रायड, एडलर व युंग का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। जोशी जी के उपन्यासों के वस्तु शिल्प के अध्ययन के लिए उनके उपन्यासों का अध्ययन कर उनके वस्तु शिल्प की विभिन्न विशेषताओं को जानना आवश्यक है।

मानसिक कुण्ठाओं और विकृतियों पर आधारित वस्तु : इलाचन्द्र जोशी जी के उपन्यासों में कथा का मूल आधार असामान्य मनोविज्ञान है। उन्होंने व्यक्ति की विभिन्न मानसिक सूक्ष्म गतिविधियों, कुण्ठाओं, विकृतियों एवं अन्तर्द्वन्द्वों को कथा का आधार बनाया है। मनुष्य के अवचेतन मन में दबी पड़ी अनेक प्रकार की कुण्ठाओं, आत्मरति, पाशविकता, अहंवादिता एवं मनोविकृतियों का चित्रण ही जोशी जी की कथा का मुख्य विषय है। इनके सभी पात्र मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। 'लज्जा' की लज्जा, 'संन्यासी' का नन्दकिशोर, 'त्याग का भोग' का नृपेन्द्ररंजन व मनिया, 'सुबह के भूले' की निरंजना व इन्द्रमोहन, 'प्रेत और छाया' का पारसनाथ आदि सभी पात्र मानसिक रूप से रूग्ण प्रतीत होते हैं। उन्होंने व्यक्ति की स्वस्थ मनोस्थिति के स्थान पर कुण्ठित व रूग्ण मनोस्थिति के चित्रण को प्रमुखता दी है। मानव मन की विभिन्न वृत्तियों का विश्लेषण कर उनके अन्दर स्थित दुर्बलताओं और सबलताओं का उद्घाटन करना ही जोशी जी के उपन्यासों का मूल–आधार है।

'लज्जा' उपन्यास में लज्जा नामक युवती के डॉ. कन्हैयालाल के प्रति वासनाजनित आकर्षण व भ्रातृप्रेम के पारस्परिक द्वन्द्व को कथा का आधार बनाया

Esatlar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

है। एक ओर वह अपने भाई से अगाध प्रेम करती है तो दूसरी ओर उसके मन में डॉ. कन्हैयालाल के प्रति वासना जनित आकर्षण है। राजू के प्रति उसके मन में प्रतिहिंसा की भावना पैदा होने लगती है। फलस्वरूप उसके अन्दर हीनता की भावना आ जाती है– "मेरे मन में यह भावना रह–रहकर जागरित हो रही थी कि मेरा भाई राजू, जो पहले मुझे अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था और अब उपेक्षा (संभवतः घृणा) की दृष्टि से देखता है, ...क्या मैं सचमुच राजू की घृणा के योग्य हूँ? क्या मैं इतनी हीन हूँ? क्यों वह मेरा स्नेह स्वीकार नहीं करना चाहता? .....मैं वास्तव में नीच और घृणित हूँ और राजू की बहन कहलाने योग्य नहीं हूँ।"[1]

'संन्यासी' में व्यक्ति के मानस में दबी पड़ी अहं भावना व पाशविक प्रवृत्तियों को कथा का आधार बनाया है। नायक नन्दकिशोर के अन्तर्मन में अवस्थित कामग्रन्थि, अहं भावना व पाशविक आचरण के कारण उत्पन्न होने वाली विभिन्न घटनाओं का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। जयंती को देखकर ही नायक के मन में कामभावना उत्पन्न होने लगती है– "किसी नवीना के दर्शन मात्र से हृदय की ऐसी कायापलट हो सकती है, इससे पहले मुझे कभी इसका अनुभव नहीं था। कितने ही युगों से रूद्ध मेरी व्याकुल वासना का बाँध ही बिल्कुल टूट पड़ा था। जिधर को गति पाता था, उसी ओर उद्दाम वेग से लग जाता था।"[2] इसीलिए वह शान्ति को उसके भाई के पास छोड़ने के बजाय इलाहाबाद का टिकट लेता है। अपने मन की इस भावना का वर्णन वह खुद ही करता है– "पर मैं एक दूसरी ही बात सोच रहा था। मेरे मन में शैतान का दूसरा ही नृत्य चल रहा था।"[3]

'प्रेत और छाया' में व्यक्ति की वैयक्तिक कुण्ठा और हीनता ग्रन्थि की

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 119

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 28

3 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 53

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भावना को कथा का आधार बनाया है। उपन्यास के नायक पारसनाथ के मन में अपने पिता की इस बात से कि उसकी माता कुलटा थी, उसके मन में हीनता ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती हे। "तुझे मालूम है छोकरे, कि तू अपने बाप का – यानी अपनी माँ के पति का बेटा नहीं है? तेरा बाप मैं नहीं बल्कि शिवशंकर वैद्य है।"[1] इसी हीनता ग्रन्थि के कारण वह सारी स्त्री जाति से घृणा करता है। "स्त्री और उसकी इज्जत! आज तक कितनी स्त्रियों की इज्जत मैंने की है? और करूँ भी क्यों?"[2] इसी घृणा और प्रतिशोध की भावना के कारण वह एक से अधिक स्त्रियों से सम्पर्क स्थापित करता है।

'पर्दे की रानी' में प्रतिहिंसा की भावनाओं व कुण्ठित मन की विभिन्न पाशविक प्रवृत्तियों के उद्घाटन एवं मानसिक जटिलताओं का मनोविश्लेषण ही कथा का मूल आधार है। उपन्यास की नायिका निरंजना के मन में एक हत्यारे की लड़की होने के कारण कुण्ठा की भावना विद्यमान है। इस सम्बन्ध में शीला लिखती है– "मुझे यह समझने में देर न लगी कि उसका इतने दिनों तक पर्दे में छिपे रहने के कारण उसके स्वभाव की संकोचशीलता नहीं है, वरन् किन्हीं अज्ञात कड़वे अनुभवों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जो एक प्रकार की वीतरागता सी उसमें आ गई है, उसका पर्दा–प्रेम उसी का वाह्य प्रदर्शन है।"[3] निरंजना के साथ–साथ इन्द्रमोहन व शीला का मनोविश्लेषण भी इस उपन्यास में हुआ है।

'निर्वासित' उपन्यास में वाह्य समाज द्वारा प्रताड़ित एवं यौन कुण्ठा–ग्रस्त, मध्यम वर्गीय व्यक्ति की मानसिक ग्रन्थियों का विश्लेषण किया गया है। कथा नायक महीप के अन्तर्मन की विभिन्न प्रवृत्तियों का उद्घाटन ही कथा का मूलाधार है। महीप खन्ना परिवार की चारों बहनों की ओर आकर्षित होता है, लेकिन ठुकराया जाता है। अपनी असफलताओं का कारण वह अपने बबुआ रूप को मानता हैं। अपने बबुआ रूप के कारण ही वह कुण्ठित है। "अपने

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 45

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 37

3 'पर्दे क रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 17

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

शरीर के छोटे कद के विरूद्ध उसके भीतर बहुत दिनों से विद्रोह चल रहा था। अपने बबुआ रूप से वह अत्यन्त घृणा करने लगा था। हर हालत में उसका प्रतिकार अन्य रूपों में अपने व्यक्तित्व का विस्तार–चाहता था। इतने समय तक अपने जीवन की असफलता का एकमात्र कारण, वह अपने व्यक्तित्व के 'बबुआ' रूप को ही मानता था।"[1] वह यौन रूप से भी कुण्ठित है, उसकी भावुकता व अत्यधिक आदर्शवादी रूप ही उसकी यौन–कुण्ठा का कारण है।

'मुक्तिपथ' में राजीव व सुनन्दा की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण को कथा का मूलाधार बनाया है। उपन्यास में सुनन्दा और राजीव के मन में दबी कामवासना, राजीव का आदर्शवादी रूप आदि अनेक घटनाओं का चित्रण हुआ है। उपन्यास का नायक राजीव पढ़ा–लिखा और क्रान्तिकारी होने के बाद भी समाज द्वारा ठुकराया जाता है। समाज द्वारा प्राप्त इन्हीं जीवनगत अनुभवों एवं उससे उत्पन्न मनोग्रन्थियों का वर्णन एवं विश्लेषण ही कथा का मूल आधार है। नौकरी नहीं मिलने से उसके मन में निराशा की भावना उत्पन्न होने लगती है। "धीरे–धीरे उसके भीतर एक भयंकर प्रकार की स्थिरता अधिकार जमाने लगी। वह अपने अंतरतल में प्रलय की आग की –सी दहनशक्ति का अनुभव करने लगा। वह सोचने लगा, इस प्रचंड अग्नि को किसी तरह बाहर निकाल कर सारे संसार को फूँककर यदि वह एक बार नये सिरे से उसकी रचना करने में समर्थ होता तो कम से कम वर्तमान युग के विश्वव्यापी मिथ्याचार की जड़ें तो नष्ट कर ही डालता।"[2] क्रान्तिकारी होने के कारण उसे सम्मान मिलने के स्थान पर अपनी जीविका ढूँढने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। राजीव व सुनन्दा के साथ ही प्रस्तुत उपन्यास में विजय और प्रमीला की विभिन्न मानसिक कुण्ठाओं का विश्लेषण किया है।

'सुबह के भूले' उपन्यास की कथा का मूल आधार उपन्यास की

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 305

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 10

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

नायिका गुलबिया की हीनतानुभूति की मनोद्वन्द्वपूर्ण कथा है। जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं कि व्यक्ति अपने मार्ग से भटक जाता है, लेकिन जब उसे अपनी गलती का अहसास होता है तो वह पुनः अपने पूर्व मार्ग पर लौट जाता है। इसी घटना का चित्रण 'सुबह के भूले' उपन्यास में हुआ है। फैशनेबल समाज की तड़क–भड़क व रहन–सहन को देखकर उसके अन्दर हीनता की भावना उत्पन्न होती है। उसी हीनता की भावना के कारण ही वह अपना नाम गुलबिया से बदलकर गिरिजा रखती है। "उसे लगता था जैसे वे सभी लड़कियाँ उसके प्रति व्यंग्य की दृष्टि से देख रही हों। वह स्वयं बहुत सीधे–सादे किस्म के कपड़े पहने थी, न उसके हाथ में घड़ी थी, न कानों में बुंदे और न गले में मोतियों की लड़ी। इसलिए वह न तो वैभव में उन लोगों का मुकाबला कर सकती थी, न ढिठाई के साथ बेतकल्लुफ बातें कर सकने में।"[1] नाम के लिए वह कहती है– "गुलबिया नाम अच्छा नहीं लगता उसमें देहातीपन की 'बू' आती है।"[2]

'त्याग का भोग' उपन्यास में बुर्जुवा वर्ग की विभिन्न प्रवृत्तियों, अहंता, भोग–विलास, ईर्ष्या, क्रोध आदि को कथा का मूल आधार बनाया है। उपन्यास में नृपेन्द्ररंजन और मनिया, फादर जरेमिया और सिल्विया एवं शोभना और वीरेन्द्र तीनों प्रेमी युगलों का मनोविश्लेषण किया है। मुख्य कथा में बुर्जुवा मनोवृत्ति के नृपेन्द्ररंजन के अहंभाव व आत्मतुष्टि की भावना का चित्रण है। मनिया से अपने निजी सुख की पूर्ति और उसके भावनाओं से खेलने के लिए वह सम्मोहन पद्धति का प्रयोग करता है। सम्पूर्ण उपन्यास में अभिजात वर्ग के अहंकार व भोग–विलास की प्रकृति और निम्न वर्ग के स्वतंत्र व्यक्तित्व, मानसिक छटपटाहट, ईर्ष्या, क्रोध, प्रतिशोध आदि विभिन्न प्रवृत्तियों का मनोविश्लेषण हुआ है।

---

1 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 81

2 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 66

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'जहाज का पंछी' में वर्तमान समाज की विभिन्न समस्याओं के अंकन को कथा का आधार बनाया है। उपन्यास का नायक कलकत्ता महानगरी में अपने लिए आश्रय व दो वक्त की रोटी खोज पाने में असमर्थ होता है। कभी वह समाज की उपेक्षा का शिकार होता है, तो कभी पुलिस की प्रताड़ना का। पढ़ा–लिखा होने पर भी वह अनेक प्रकार के कार्य करने को विवश होता है। कभी वह अस्पताल में रोगी बनकर अपने लिए आश्रय पाना चाहता है, तो कभी जेल में रहकर, कभी भादुड़ी महाशय के यहाँ रसोइया बनकर, कभी मिस साइमन के चकले में रसोइया बनकर, कभी लीला के यहाँ अतिथि बनकर, लेकिन हर जगह अपनी ईमानदारी, आदर्शवादी एवं अहंभावना के कारण टिक नहीं पाता है। व्यक्ति के जीवन में घटित होने वाली इन यथार्थ घटनाओं को ही लेखक ने उपन्यास की कथा का आधार बनाया है।

'ऋतुचक्र' उपन्यास में भी अन्य उपन्यासों की तरह ही मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण को ही उपन्यास की कथा का आधार बनाया है। इस उपन्यास में दादा अर्थात मिलन कुमार चटर्जी और प्रतिमा, नकुलेश और चित्रा, मणिक और लिली एवं रामबाबू और सोनी का मनोविश्लेषण ही कथा का मूलाधार है। प्रधान कथा दादा और प्रतिमा की है। तिरेपन वर्ष की अवस्था में स्नेह और सहानुभूति का व्यवहार करने वाले एवं धैर्यशाली दादा छियालिस वर्ष की प्रतिमा की ओर आकर्षित होते हैं। गौण कथा में नकुलेश और चित्रा, माणिक और लिली एवं रामबाबू और सोनी का एक–दूसरे के प्रति आकर्षण का चित्रण है।

'भूत का भविष्य' उपन्यास में समाज द्वारा प्रताड़ित एवं उपेक्षित व्यक्ति के मनोविश्लेषण को कथा का आधार बनाया है। यह भूतनाथ नामक एक ऐसे व्यक्ति की कथा है जो समाज की प्रताड़ना से उपेक्षित होकर छुपकर एक भूतहा मकान में आने वाले किरायेदारों को परेशान करता है। समाज के प्रति उसके मन में अपार घृणा की भावना विद्यमान है। उच्च वर्ग के लोगों के प्रति उसके

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मन में प्रतिशोध की भावना है। भूतनाथ की कथा के साथ ही उपन्यास में राकेश और नन्दा के त्रासद्पूर्ण प्रेम कहानी का वर्णन भी है।

व्यक्ति प्रमुख का मनोविश्लेषण : इलाचन्द्र जोशी जी ने अपने उपन्यासों में व्यक्ति प्रमुख के मनोविश्लेषण को प्रधानता दी है। उनके अधिकांश उपन्यासों में इस मनोवृत्ति के दर्शन होते हैं। 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'त्याग का भोग', 'जहाज का पंछी', 'ऋतुचक्र' एवं 'भूत का भविष्य' में समाज के परिपार्श्व में व्यक्ति विशेष का मनोविश्लेषण किया गया है। 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया', 'निर्वासित' में व्यक्ति विशेष के अवचेतन मन की दमित इच्छाओं, कुण्ठाओं और मनोविकृतियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा के अहंभाव एवं अन्य मनोविकृतियों का चित्रण किया है। 'संन्यासी' का नन्दकिशोर, 'निर्वासित' का महीप, 'पर्दे की रानी' की निरंजना, 'प्रेत और छाया' का नृपेन्द्ररंजन आदि सभी पात्रों के अन्तर्मन में अवस्थित विभिन्न वृत्तियों का विश्लेषण और संश्लेषण इन्होंने इन उपन्यासों में किया है।

व्यक्ति के अहंभाव का रहस्योद्घाटन इन्होंने विभिन्न स्वरूपों में किया है। आज व्यक्ति थोड़ा सा आगे बढ़ने पर अहंवादी बन जाता हैं और अपने आप को सबसे उत्कृष्ट समझने की भूल कर बैठता है यही अहंवादी रूप 'लज्जा' की लज्जा, 'संन्यासी' का नन्दकिशोर, 'पर्दे की रानी' की निरंजना, 'प्रेत और छाया' का पारसनाथ, 'निर्वासित' का महीप आदि पात्रों में मिलता है। 'लज्जा' इसी अहंभाव के कारण ही अपने प्यारे भाई के स्नेह की अहवेलना कर कन्हैयालाल की ओर आकर्षित होती है और अपने प्यारे भाई राजू की आत्महत्या का कारण बनती है। 'संन्यासी' का नन्दकिशोर भी अहंवाद के कारण ही स्वार्थी, ईर्ष्यालु और शंकालु स्वभाव का बन जाता है। फलस्वरूप अपना सर्वस्व गवाँ देता है। 'प्रेत और छाया' के पारसनाथ अहंवाद के कारण ही दूसरों के चरित्र से खेलकर आत्मतृप्त होता है। कुमारियों के कौमार्य को खण्डित करने से भी अधिक सन्तुष्टि उसे विवाहित नन्दिनी के स्त्रीत्व को हरण करने में होती है। 'सुबह के

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भूले' की नायिका गिरिजा में भी अहंभाव पाया जाता है। अन्त में हेमकुमार उसके अहं का परिष्कार करता है। 'पर्दे की रानी' में निरंजना अपने रूप के कारण अहंवादी हो जाती है।

जोशी जी ने व्यक्ति के हृदय में छिपे विभिन्न वृत्तियों एवं भावनाओं का चित्रण किया है। उन्होंने मानव मन के अन्तर्द्वन्द्व को भी सफलतापूर्वक उद्घाटित किया है। 'निर्वासित' में महीप नीलिमा से मिलने का वायदा करने पर भी सोचता है कि जाऊँ या न जाऊँ। वहीं प्रेत और छाया का नायक पारसनाथ पतन–मार्ग की ओर अग्रसर होने से पूर्व अन्तर्द्वन्द्व में फँसा नजर आता है।

कथा का प्रारम्भ : इलाचन्द्र जोशी जी ने अपने उपन्यासों में कथा प्रारम्भ करने के लिए दो विधियों का प्रयोग किया है– आत्मकथात्मक अथवा पूर्व स्मृति द्वारा और स्वयं उपन्यासकार द्वारा। आत्मकथात्मक उपन्यासों में कथा का प्रारम्भ उपन्यास का नायक स्वयं करता है। वह पूर्वस्मृति द्वारा विगत जीवन की स्मृतियों का उद्घाटन करता है। 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'त्याग का भोग' और 'जहाज का पंछी' में कथा का प्रारम्भ आत्मकथात्मक ढंग से हुआ है। अन्य उपन्यासों का प्रारम्भ स्वयं उपन्यासकार द्वारा हुआ है। 'लज्जा' उपन्यास की नायिक लज्जा स्वयं ही कथा का आरम्भ करती है– "घृणा! घृणा! मेरी सारी आत्मा आज घृणा के भाव से ओत–प्रोत है। मुझ हत्यारी नारी ने आज समस्त प्रकृति को, सारे विश्व को अपने अन्तस्थल की घृणा से लीपपोतकर एकाकार कर दिया है। इस अनन्त सृष्टि का अस्तित्व ही मेरे लिए केवल घृणा को लेकर है। स्त्री का रूप देखते ही घृणा से मेरा खून खौलने लगता है, पुरूष की छाया से भी मेरा हृदय जर्जरित हो उठता है।"[1] पूर्वस्मृति द्वारा लज्जा अपनी बाल्यावस्था की कथा को पाठकों के सम्मुख रखती है– "जिस भवन में मेरा जन्म हुआ, वह शहर में विख्यात था। काका ने जब एक साधारण रकम देकर उसे खरीदा था, तब उसमें भूतों का डेरा बताया जाता था।.....हाय! भाई बहनों के

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 5

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

साथ आनन्द से हिल–मिलकर रहने और निर्द्वन्द्व भाव से मुक्त विचरकर खेलकूद करने के उन प्यारे दिनों को अतीत की कराल छाया कितनी निष्ठुरता के साथ हरण कर ले गई।"[1]

'संन्यासी' उपन्यास का प्रारम्भ आत्मकथात्मक ढंग से किया है। उपन्यास का नायक नन्दकिशोर अपनी अन्तर्वेदना को पाठकों के सामने रखता है– "साल–भर जेल की सजा भुगत कर अभी लौटा हूँ। मेरे साथ के जो–जो देशसेवी कारामुक्त होकर वापस आये हैं; उन सब ने बन्धनावस्था में भी दलित, दुःखित देश की ही चिन्ता की है और बाहर आकर अपने संस्मरण साप्ताहिक अथवा मासिक पत्रों में छपायें हैं। पर मैं पापी सदा आलस्यमय जीवन बिताने के बाद अन्त को जब भाग्य की विडम्बना से अकस्मात संन्यासी बन बैठा और देश माता के वीर–पुत्रों की प्रेरणा से लहर में आकर एक जोशीली वक्तृता देने के कारण जेल के अन्दर ठूँस दिया गया, तो उस परास्त अवस्था में किसकी व्याकुल आत्मा का हाहाकार चट्टानों पर पछाड़ खाती हुई निस्सहायावस्था की कल्पना से में रह–रहकर पागलों की तरह छटपटाने लगा।"[2] 'लज्जा' की तरह ही 'संन्यासी' का नायक नन्दकिशोर भी पूर्वस्मृति द्वारा अपने विगत जीवन की विभिन्न घटनाओं को पाठकों के सम्मुख प्रकट करता है – "बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी में मैं एम.ए. प्रीवियस में पढ़ता था। मेरा प्रिय विषय था संस्कृत। फोर्थ हास्टल में संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों के साथ जिस कमरे में मैं रहता था, उसमें तीन विद्यार्थी और भी थे।"[3]

'पर्दे की रानी' उपन्यास का आरम्भ वैचित्र्यपूर्ण वातावरण में होता है। निरंजना के हास्टल में प्रवेश लेने पर उसका सौन्दर्य सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। शीला भी उस पर मुग्ध हो जाती है। वह कहती है– "मेरी संगिनी चन्द्रप्रभा ने आकर मुझसे कहा – 'आज एक सुन्दर लड़की हास्टल में

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 7

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 5

3 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 6

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भर्ती होने आई है। ऐसा जान पड़ता है कि वह किसी राजा की लड़की है।"[1] उपन्यास के दूसरे भाग में निरंजना अपनी कथा पाठकों के सम्मुख रखती है– "कौन ऐसा व्यक्ति है जिसे अपने प्रारम्भिक जीवन की स्मृतियाँ प्रिय नहीं लगती। चाहे वे कैसे ही दुःख–दरिद्रय की प्रगाढ़ छायाओं से घिरी क्यों न हो? पर मेरे जीवन की इस विकृति का अनुमान कीजिए कि यद्यपि मेरा प्रथम जीवन ऐश्वर्य की सुखद क्रोड़ में व्यतीत हुआ, तथापि उसकी स्मृतियाँ आज तीखे विष बुझे कीलों की तरह किसी अज्ञात हाथ के हथौड़े की चोटों से मेरे हृदय में गड़ने लगती है।"[2] पूर्वस्मृति के द्वारा निरंजना अपने पूर्व जीवन के संस्मरणों को याद करती है– "उस कराल.....रात्रि को मैं उठते, बैठते, सोते–जागते एक पल के लिए भी कभी भूल नहीं पाती। यद्यपि प्रतिक्षण ज्ञात में या अज्ञात में, भूलने का प्रबल प्रयास करती रहती हूँ। विश्व–विनाशी प्रलयंकर रूद्र के साथ वह मेरे प्रथम तथा चरम मिलन की रात थी;"[3]

'त्याग का भोग' उपन्यास का नायक अपने पूर्व जीवन की स्मृतियों का स्मरण कर कथा का प्रारम्भ करता है– "उस वर्ष मैं गर्मियों में मसूरी गया हुआ था अकेला। जिस होटल में मैं ठहरा हुआ था, वहाँ से देहरादून की तरफ का विस्तृत दृश्य स्पष्ट दिखायी देता था। एक दिन मैं दोपहर का खाना खाने के बाद कुछ देर धूप खाने के इरादे से बाहर बरामदानुमा आँगन में एक आराम–कुर्सी पर बैठा हुआ देहरादून की ओर मुँह किये हुए नीचे दूर तक फैले हुए ढालुवा विस्तार का दृश्य देखने में तल्लीन था।"[4]

'जहाज का पंछी' उपन्यास का आरम्भ भी आत्मकथात्मक ढंग से हुआ है। उपन्यास का नायक कथा का आरम्भ करता है– "तो अन्त में मुझे इस गली में शरण मिली है कलकत्ता महानगरी, के इस नरक में, गन्दगी को भी गन्दा

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 7

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 31

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 31

4 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

करने वाले इस घूरे में, सभ्य संसार की इस फैशन की रंगीनी के आवरण के भीतर मानव जगत के मर्म में छिपे हुए इस कोढ़–केन्द्र में विश्वास मानिए, मैं केवल विवशता के कारण यहाँ आया हूँ, किसी प्रकार की ज्ञात या अज्ञात इच्छा या कुतूहल या जीवन की गन्दगी का ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता से प्रेरित होकर नहीं।"[1]

'निर्वासित', 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'ऋतुचक्र' एवं 'भूत का भविष्य' में लेखक ने स्वयं ही कथा का आरम्भ किया है। 'निर्वासित' में उपन्यासकार कथा का आरम्भ करते हुए लिखता है– "गर्मियों के दिन थे। दिन भर कुम्भीपाक की गर्मी से सबको झुलसाने के बाद सूरज डूब चुका था, पर लू की लपटें अब भी थपेड़े मार रही थी। टैगोर टाउन में एक विशेष राष्ट्रीय जलसे के उपलक्ष्य में बड़ी चहल–पहल मची हुई थी। विभिन्न प्रान्तों से देश के प्रमुख नेतागण आये हुए थे। उनके दर्शन करने और उनके भाषण सुनने के लिए उत्सुक जनता ने पण्डाल में अच्छी–खासी भीड़ लगा रखी थी। राष्ट्र के भाग्य के सम्बन्ध में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और निश्चित निर्णय होने जा रहा था। इसीलिए जनता के हृदय में एक निराली चंचलता छाई हुई थी और एक अपूर्ण उत्साह की लहर–सी पण्डाल के भीतर और बाहर चारों ओर उमड़ रही थी।"[2]

'मुक्तिपथ' उपन्यास में उपन्यासकार वातावरण के चित्रण के साथ कथा का आरम्भ करता है– "आज तीन चाद दिन बाद सूरज के दर्शन हुए थे। पहाड़ में घनी बर्फ गिरने की खबर अखबारों में छप चुकी थी। लखनऊ में भी काफी जाड़ा पड़ रहा था। इसीलिए धूप बहुत प्यारी मालूम हो रही थी। राजीव अमीनाबाद पार्क में एक बैंच पर बैठकर मूँगफलियाँ तोड़ कर खाता जा रहा था।

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 1

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

उसका शरीर न इकहरा था न दुहरा। संतुलित कद का अच्छा गठा हुआ सा लगता था।"[1]

'सुबह के भूले' में उपन्यासकार कथा का आरम्भ करते हुए लिखता है– "बम्बई नगर के उत्तरी छोर पर जहाँ शहराती तड़क–भड़क की रंगीनी मिटते–मिटते केवल एक अत्यन्त सूक्ष्म धुएँ की रेखा के रूप में अवशिष्ट रह जाती है, गंदी झोपड़ियों की लम्बी कतारें खड़ी हैं। कूड़ेखानों से बटोरे गये गंदे, चीथड़ों, कागजों, गत्ते के टुकड़ों, नालियों में पड़ी हुई चैलियों या बाँस की खपचियों और इधर–उधर से भीख के रूप में माँगी गयी या चोरी–छिपे पेड़ो से काटी गयी मोटी लकड़ियों को जुटाकर वे झोपड़ियाँ तैयार की गयी हैं।"[2]

'ऋतुचक्र' का आरम्भ भी प्राकृतिक वातावरण के चित्रण से हुआ है– "कु–कु –कुर–कुर–कुर ।।।।। यह चिड़िया बोल रही थी।। हे–हे–ए–ए–ह ह ह हा ।। यह आदमी बोल रहा था। चारों ओर ऊँचे पहाड़ी पर कतारों में खड़े देवदारु के लंबे–लंबे ऊँचे पेड़ों की छाया सघन से सघनतर होती चली आ रही थी। उन पेड़ों की चोटियाँ पहाड़ो के उस पार डूबते हुए सूरज की अंतिम पीली धूप से, जो हरीतिमा में घुली हुई थी, एक नये ही रंग से झिलमिला रही थी।"[3]

'भूत का भविष्य' का प्रारम्भ करते हुए उपन्यासकार लिखता है– "किसी तरह राकेश उस दिन भी नन्दा के साथ सुबह आठ बजे के करीब मकान की खोज में निकल पड़ा। उसका मन कह रहा था कि कहीं–न–कहीं मकान अवश्य मिल जायेगा। गरमी पूरी जोरों पर थी। उन्हें इलाहाबाद आये एक महीने के करीब हो गया था और प्रतिदिन चार–चार चक्कर लगाने पर भी कहीं कोई मकान नहीं मिल रहा था। कल शाम उसके एक परिचित सज्जन के आश्वासन

---

1 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 5

2 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 1

3 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

देते हुए बताया था कि सिविल लाइन्स के पास ही एक गली में एक काफी बड़ा मकान सस्ते किराये पर मिल रहा था।"[1]

कथा विकास : इलाचन्द्र जोशी जी ने अपने उपन्यासों में रूग्ण मानसिकता, यौन कुण्ठा, हीनता एवं अहं के उद्‌घाटन द्वारा कथासूत्र को आगे बढ़ाया है। मानव मन के सूक्ष्म प्रवृत्तियों के स्पष्टीकरण द्वारा कथा विकास हुआ है। इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक पद्धतियों एवं असाधारण घटनाओं के माध्यम से भी कथासूत्र को आगे बढ़ाया है। जोशी जी के उपन्यासों में कथा विकास को उनके उपन्यासों के अध्ययन से जाना जा सकता है।

'लज्जा' उपन्यास में नायिका लज्जा की रूग्ण मानसिकता के उद्‌घाटन द्वारा कथासूत्र को आगे बढ़ाया है। लज्जा की विचित्र एवं पश्चातापपूर्ण मनोस्थिति के वर्णन के कथासूत्र आगे बढ़ा है– "....भाई बहन के बालकपन का निर्मल–प्रेम कितना दुर्लभ और कितना अमूल्य है। भाई? धिक्कार है मुझ हत्यारी को! किस जले मुँह से यह शब्द अब मैं निकाल सकती हूँ? किस निर्लज्ज लेखनी से इन दो अक्षरों को लिख सकती हूँ? भगवान! इस बेहयाई का क्या कुछ ठिकाना है! जान बूझकर अपने भाई की हत्या करके उसी की गुण–गाथा गाने का पाखंड रचती हूँ।"[2] काम भावना के दमन के कारण वह मानसिक रूप से रूग्ण प्रतीत होती है– "....सोचते–सोचते मेरा सारा शरीर जर्जरित होने लगा और मैं ऐसा अनुभव करने लगी, जैसे अभी–अभी मेरे शरीर मे स्थान–स्थान पर फोड़े उत्पन्न होने लगे हों। वहम के सबब बेबस होकर मैंने कहा– "यह कैसा लोमहर्षक वर्णन आपने सुनाया। मुझे भी इसी रोग का वहम होने लगा है। कहीं मुझे भी यह बीमारी न हो जाय।"[3] असाधारण घटनाओं द्वारा भी लेखक ने कथासूत्र को आगे बढ़ाया है। राजू द्वारा लज्जा व डॉ. कन्हैयालाल के प्रेम को

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 1

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 7

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 89

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

देखकर आत्महत्या करना, राजू की आत्महत्या के बाद लज्जा का कन्हैयालाल से घृणा करना आदि असाधारण घटनाएँ हैं।

'संन्यासी' में नायक नन्दकिशोर के असाधारण एवं वैचित्र्यपूर्ण आचरण द्वारा कथा का विकास हुआ है। उपन्यासकार ने नायक के अन्दर अवस्थित प्रेम, सहानुभूति, सदाशयता, ईर्ष्या, क्षोभ, सन्देहशीलता, परपीड़न की भावना आदि विभिन्न प्रवृत्तियों के विश्लेषण द्वारा कथा को आगे बढ़ाया गया है। जयंती से प्रथम साक्षात्कार से नन्दकिशोर के मन में उत्पन्न कामभावना कथासूत्र को आगे बढ़ाती है– "मैं निपट अबोध बालक नहीं था। कोई युवती, किशोरी अथवा बालिका आज तक मैंने कहीं न देखी हो, यह बात भी नहीं। स्त्री–पुरूष के पारस्परिक आकर्षण की बात से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ होऊँ, ऐसा भी नहीं। पर मुझे आपका यह अनुभव बिल्कुल नया और निराला जान पड़ता था।"[1] उसका सन्देहशील स्वभाव भी कथासूत्र को आगे बढ़ाता है– "मैंने झल्लाकर कहा– 'ऊब गया हूँ मैं या तुम? उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे! इस तरह की बातें करते तुम्हें शर्म नहीं मालूम होती? तुम क्या मुझे अन्धा समझ रही हो? इतने दिनों तक तुम्हारे साथ रहकर मैं तुम्हारी नस–नस पहचान गया हूँ इस तरह की बातों से तुम मुझे भुलावें में नहीं रख सकती। बलदेव के प्रति तुम्हारे मन का जो भाव है तुम क्या समझती हो कि वह मुझसे छिपा है?"[2] असाधारण घटनाएँ भी कथा विकास में सहायक हुई हैं। नन्दकिशोर द्वारा शान्ति के साथ भागना, उसे जानबूझकर इलाहाबाद में जाने देना, जयंती से विवाह, जयंती द्वारा आत्महत्या, नन्दकिशोर का शान्ति से मिलन, शान्ति का अपने बच्चे को छोड़कर चले जाना आदि घटनाएँ असाधारण हैं, जो कथा विकास को आगे बढ़ाने में सहायक हुई हैं।

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 119

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'पर्दे की रानी' में निरंजना की मानसिक कुण्ठाओं व इन्द्रमोहन की काम–प्रवृत्ति के उद्‌घाटन द्वारा कथासूत्र को आगे बढ़ाया गया है। निरंजना अपने जन्मजात संस्कारों के कारण प्रथम दृष्टि में ही इन्द्रमोहन की ओर आकर्षित हो जाती है– "प्रथम दृष्टि से ही मुझ पर इन्द्रमोहन के व्यक्तित्व का जो प्रभाव पड़ा, उसका विश्लेषण करने की चेष्टा में मैं निश्चय ही असफल रहूँगी।.....उन्हें देखते ही मेरा प्रतिरक्तकण न जाने किस अतल में सुप्त संस्कारों के आकस्मिक जागरण के फलस्वरूप एक निराले विद्युतस्फुरण से तरंगित होने लगा।"[1] निरंजना के मन में शीला के लिए प्रेम व प्रतिहिंसा के परस्पर विरोधी भाव भी कथासूत्र को आगे बढ़ाते हैं – "मैंने जानकर या अनजान में अवश्य तुम्हारे साथ भयंकर अन्याय किया है, कर रही हूँ और बहुत सम्भव है भविष्य में भी करती रहूँगी। फिर भी तुम यह निश्चित रूप से जान लो कि तुम्हारे प्रति मेरे हृदय में एक सच्ची ममता वर्तमान है।"[2] इन्द्रमोहन की अहंवादी प्रवृत्ति द्वारा कथासूत्र आगे बढ़ा है– "मुझमें और दूसरे व्यक्तियों में केवल इतना ही अन्तर है कि मैं दूसरों को भले ही ठगूँ पर अपने आपको ठगना नहीं चाहता। मैं स्पष्ट रूप से अपने आगे यह स्वीकार कर लेता हूँ कि मैं बड़ा आत्मगत हूँ, और मेरा 'मैं' ही मेरे लिए सबकुछ है।"[3] वैचित्र्यपूर्ण एवं असाधारण घटनाओं द्वारा कथा का विकास हुआ है। इन्द्रमोहन का निरंजना को पाने के लिए अपनी पत्नी शीला को विष देकर मारना, प्रेमाधिक्य के कारण ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या करना, निरंजना का जन्मजात संस्कारों के कारण इन्द्रमोहन की ओर आकर्षण, इन्द्रमोहन द्वारा जबरदस्ती करने पर उसका प्रतिकार आदि असाधारण एवं वैचित्र्यपूर्ण घटनाएँ कथासूत्र को आगे बढ़ाने में सहायक हुई हैं।

'प्रेत और छाया' में पारसनाथ की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों– अहंता, कामुकता, हीनता आदि के द्वारा कथा का विकास किया गया है। पारसनाथ

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 47

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 165

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 196

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कुण्ठा के कारण असाधारण एवं रहस्यमयी हो जाता है। ये असाधारण व रहस्यमयी आचरण कथासूत्र को आगे बढ़ाते हैं। अपने पिता द्वारा कही गई बात से उत्पन्न कुण्ठा द्वारा कथा को आगे बढ़ाया है– "अपने 'पिता' बाबू बैजनाथ की वह मर्मघाती बात फिर एक बार उसके अन्तर्मन के स्मृति–पटल को चीरकर ऊपर उठ आई, जो प्रतिदिन, प्रतिपल उसे अवचेतन मन को कुरेदती रहती थी।"[1] पारसनाथ पूर्वदीप्ति द्वारा अपने विगत जीवन की कथा को पाठकों के सम्मुख रखता है, जिससे कथा का उत्तरोत्तर विकास होता है। उसके अन्दर स्त्री जाति के प्रति घृणा व प्रतिहिंसा की भावना को प्रकट कर उपन्यासकार कथासूत्र को आगे बढ़ाता है– "मेरा ध्रुव विश्वास है कि संसार में केवल वे ही स्त्रियाँ 'सती साध्वी' होने का ढोंग रच सकती हैं, जिन्हें या तो समाज के कड़े बन्धनों ने स्वेच्छाचरण का मौका नहीं दिया है, या जिन्हें प्रार्थित पुरूष प्राप्त नहीं हो पाये हैं।"[2] पारसनाथ का असाधारण व्यक्तित्व भी कथा विकास में सहायक हुआ है। अपनी मनोवृत्तियों को जानने के बाद भी वह उन्हें छोड़ नहीं पाता है। यहाँ तक कि उसकी अन्तर्रात्मा उसे सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है, लेकिन वह उसकी आवाज को अनसुना कर पूर्ववत् जीवन बिताता है।

'निर्वासित' में कुण्ठाग्रस्त प्रवृत्तियों एवं मानसिक उलझनों का विश्लेषण कर कथासूत्र को आगे बढ़ाया है। उपन्यास में कुण्ठाग्रस्त महीप के अन्दर विद्यमान अनेक प्रकार की प्रवृत्तियों– हीनता, कामग्रन्थि आदि के उद्घाटन द्वारा कथा का विकास हुआ है। खन्ना परिवार की चारों बहनों द्वारा ठुकराऐ जाने पर उसे अन्दर हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है। वह अपने बबुवा रूप के कारण कुण्ठित है। छोटे कद के विरूद्ध द्वन्द्व के वर्णन से उपन्यासकार कथासूत्र को आगे बढ़ाता है– "अपने शरीर के छोटे कद के विरूद्ध उसके भीतर बहुत दिनों से विद्रोह चल रहा था, अपने बबुआ रूप से वह अत्यन्त घृणा करने लगा और हर हालत में उसका प्रतिकार अन्य रूपों में अपने व्यक्तित्व का विस्तार

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 45

2 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 37

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

चाहता था। इतने समय तक अपने जीवन की असफलता का एकमात्र कारण वह अपने व्यक्तित्व के उस बबुआ रूप को ही मानता था। इसलिए अन्तर्जगत की विस्फोटक क्रिया के फलस्वरूप जब उसे (न जाने किस आधार पर) यह बोध होने लगा कि उसके भीतरी व्यक्तित्व में विशालता आ रही है।"[1] महीप के अतिरिक्त उपन्यास में नीलिमा, प्रतिमा, शारदा, धीराज व लक्ष्मीनारायण सिंह आदि की विभिन्न प्रवृत्तियों का उद्‌घाटन किया है, जिससे कथा का उत्तरोत्तर विकास होता रहता है। नीलिमा जहाँ एक ओर आर्थिक सम्पन्नता के कारण लक्ष्मीनारायण की ओर आकर्षित होती है तो दूसरी ओर महीप को भी चाहती है। उसके इस द्वन्द्व को वर्णित कर कथासूत्र को आगे बढ़ाया गया है। उपन्यास में असाधारण आचरण के कारण उत्पन्न घटनाओं का भी कथा विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नीलिमा का चाय में एक चम्मच चीनी अधिक डाले जाने से घर छोड़कर भाग जाना, महीप के साथ कानपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँचना, वहाँ महीप को अपना पति बताना, नीलिमा और लक्ष्मीनारायण का विवाह, धीराज द्वारा आत्महत्या महीप द्वारा क्रान्तिकारी दल का गठन और अन्त में जेल जाना आदि असाधारण घटनाएँ हैं, जो कथा विकास में सहायक हुई हैं।

'मुक्तिपथ' में व्यक्ति की विभिन्न मानसिक ग्रन्थियों के उद्‌घाटन और विश्लेषण से कथासूत्र आगे बढ़ा है। उपन्यास में प्रमुख रूप से राजीव व सुनन्दा की विभिन्न मानसिक समस्याओं के अंकन द्वारा कथा का विकास हुआ है। आजादी की लड़ाई में क्रान्तिकारी रह चुका राजीव उचित सम्मान नहीं मिलने और अपनी जीविका ढूँढने में असफल रहने के कारण हीन भावना ग्रस्त हो जाता है। अनेक बार असफल होने पर भी वह प्रयास करना नहीं छोड़ता है, इसी के वर्णन द्वारा उपन्यासकार कथासूत्र को आगे बढ़ाता है– "जीविका का कोई उपाय ढूँढ निकालने के लिए वह तीन सप्ताह से लखनऊ में आकर भटक रहा था। अखबारों में 'वांटेड' के कालम पढ़ कर, दो–तीन जगह आवेदनपत्र भेज कर, वह

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 322

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

प्रबन्धकों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर हार मान चुका था। आज फिर वह किसी तरह हिम्मत बाँधकर साबुन के एक बड़े कारखाने के मालिक से मिलने गया था।"[1] नौकरी नहीं मिलने से वह मानसिक रूप से संकीर्ण एवं कुण्ठित हो जाता है। उसकी संकीर्णता व कुण्ठा की स्थिति का वर्णन कथासूत्र को आगे बढ़ाता है। उसके असाधारण आचरण से उत्पन्न असाधारण घटनाएँ भी कथा विकास में सहायक हुई हैं। वह सुनन्दा की ओर आकर्षित होता है लेकिन उसका आकर्षण प्रेमी–प्रेमिका का न होकर एक अहंवादी मानव का आकर्षण है। वह प्रारम्भ से ही सुनन्दा से भयभीत रहता है। फलस्वरूप उसके अन्दर हीनता और अपने लिए घृणा की भावना उत्पन्न होने लगती हैं, जिससे कथा विकास में सहायता मिलती है– ".....दूसरे व्यक्तियों के आगे वह अपने अन्तस्थल की समस्त विद्रोही प्रवृत्तियों को एकत्रित करके हृदय में एक अज्ञात भय और संभ्रम का भाव संचारित करने में समर्थ होता था। पर इस तेजस्विनी के आगे उसकी सारी शक्तियाँ छिन्न–भिन्न हो जाती थी और वह अपने को अत्यन्त क्षुद्र और घृणित समझने लगता था।"[2] राजीव व सुनन्दा के पारस्परिक द्वन्द्व द्वारा भी कथा का विकास हुआ है। राजीव जहाँ व्यक्तिगत सुख–दुःख को कोई अहमियत नहीं देता है वहीं सुनन्दा सुख–दुःख व विश्राम को जीवन के लिए आवश्यक मानती है। उपन्यासकार विजय के स्वार्थी व अर्थसंचयी रूप का वर्णन कर कथासूत्र आगे बढ़ाता है– "छुटपन में घोर आर्थिक अभाव में बीतने के कारण अर्थ–संग्रह की उत्कट लालसा उसके भीतर घर कर गई थी।"[3]

'सुबह के भूले' में किसी समाज की तड़क–भड़क व रंगीनी के प्रभाव से उत्पन्न हीनतानुभूति व कुण्ठा की भावनाओं का मनोविश्लेषण कर कथासूत्र को आगे बढ़ाया गया है। नायिका अपने नाम से भी घृणा करने लगती है। उसकी हीनताभूति का वर्णन कर उपन्यासकार कथा को आगे बढ़ाता है– "यद्यपि वहाँ

---

1 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 11

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 22

3 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 106

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कोई लड़की उसे उसके नाम के लिए नहीं चिढ़ाती थी, पर उसे स्वयं अपने नाम से चिढ़ होने लगी थी। वह बहुत दिनों से अपना नाम बदलने की बात सोच रही थी, पर संकोचवश ऐसा नहीं कर पाती थी।"[1] उसे गुलबिया नाम से देहातीपन की 'बू' आती है। उसकी आत्मलघुता की भावना का वर्णन कर कथा का विकास हुआ है– "फैशनेबल लड़कियों के समाज में अपने पोशाक–पहनावे की सादगी के कारण भी उसमें आत्म–लघुता की भावना घर किये हुए थी।"[2] उपन्यास में झमिया के सहृदय, सहनशील व दृढ़चरित्र व्यक्तित्व का चित्रण करके भी कथा का विकास हुआ है।

'त्याग का भोग' में बुर्जुवा संस्कारों के चित्रण व व्यक्ति की विभिन्न मानसिक वृत्तियों का मनोविश्लेषण द्वारा कथा का विकास हुआ है। उपन्यासकार ने बुर्जुवा संस्कारों से परिपूर्ण नृपेन्द्ररंजन की विभिन्न मानसिक विकृतियों के वर्णन द्वारा कथा को आगे बढ़ाया है। नृपेन्द्ररंजन बुर्जुवा संस्कारों में पला होने के कारण रोमानी प्रकृति का है। वह मनिया को पूर्ण रूप से पाना चाहता है। इसके लिए वह सम्मोहन का प्रयोग करता है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही कथासूत्र को आगे बढ़ाने के लिए सम्मोहन पद्धति का प्रयोग किया गया हैं। सम्मोहन की अवस्था में रंजन मनिया से कहता है– ".....मुझे प्यार करो, उसी में डूब जाओ और उसी में अपनी सारी जिन्दगी को खपा दो, बस! बोलो, करोगी मुझे प्यार?"

"हाँ!"

"फिर बोलो कि मुझे प्यार करोगी और खुश रहोगी?"

"हाँ प्यार करूँगी और खुश रहूँगी।"

"अब तो मैं काल की तरह नहीं लगता हूँ?"

---

1 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 66

2 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 84

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

"नहीं"

"तब नींद से उठ बैठो।"[1]

उपन्यास में स्थान–स्थान पर लम्बे–लम्बे भाषणों के कारण कथा का विकास मन्द गति से होता है। सम्मोहन कला का प्रयोग अधिक होने के कारण कथा में असाधारणता आ गयी है। इससे कथा तत्व गौण हो गया है। कथानक के स्वाभाविक विकास में भी बाधा आयी है।

'जहाज का पंछी' में व्यक्ति के जीवन में घटित होने वाली विभिन्न यथार्थ घटनाओं के वर्णन द्वारा कथा का विकास हुआ है। उपन्यास में पुलिस व समाज द्वारा प्रताड़ित एक शिक्षित नवयुवक की मानसिक स्थिति का वर्णन है। पढ़े–लिखे होने के बावजूद उसे कहीं नौकरी नहीं मिलती है। सम्पूर्ण उपन्यास में पुलिसिया उत्पीड़न, अस्पतालों की दशा, वेश्या समस्या आदि अनेक समस्याओं के विश्लेषण द्वारा कथासूत्र आगे बढ़ा है। प्रारम्भ में ही लेखक पुलिसिया उत्पीड़न द्वारा कथासूत्र को आगे बढ़ाता है। पुलिस वाला उससे कहता है– "मैं इसे जानता हूँ। रात में कभी पार्क में और कभी फुटपाथ में लेटा रहता है। पक्का दस नम्बरी है। क्या बे क्या हाल है? चल उठ!"[2] और जब लड़का रिपोर्ट लिखवाने में आनाकानी करता है तो पुलिसवाला नवयुवक को धक्का देकर गिरा देता है। इसके पश्चात् उपन्यासकार अस्पतालों की दशा का वर्णन कर कथासूत्र को आगे बढ़ाया है। उपन्यास में नायक के असाधारण आचरण के द्वारा कथा को विकास मिला है। पुलिस द्वारा धक्का देकर अस्पताल पहुँचने की घटना, 'कनफेशन्स ऑफ ऐ ठग' पुस्तक खरीदने की घटना, नेता भादुड़ी मोशाय के यहाँ जाने, खाना खाने की घटना, लीला के वहाँ मेहमान बनकर रहने की घटना आदि असाधारण घटनाएँ हैं, जो कथासूत्र के विकास में सहायक हुई हैं।

---

1 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 47

2 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 14

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'ऋतुचक्र' उपन्यास में अभुक्त कामनाओं, असाधारण एवं वैचित्र्यपूर्ण घटनाएँ कथा विकास में सहायक हुई हैं। सम्पूर्ण उपन्यास में दादा अर्थात मिलन कुमार चटर्जी, प्रतिमा, चित्रा, नकुलेष, मणिक, लीली आदि लोगों के मनोविश्लेषण द्वारा कथासूत्र आगे बढ़ा है। प्रधान कथासूत्र दादा और प्रतिमा का है, जो कि अन्त तक चलता है। इसके अतिरिक्त नकुलेश और चित्रा, मणिक और लीली, रामबाबू और सोनी आदि प्रासांगिक कथासूत्र हैं। उपन्यास के सभी पात्र अभुक्त कामनाओं से पीड़ित हैं। दादा तिरेपन वर्ष की आयु में छियालिस वर्षीय प्रतिमा की ओर आकर्षित होते हैं। उनका प्रणय सम्बन्ध कथासूत्र के विकास में सहायक हुआ है। कथासूत्र को आगे बढ़ाने के लिए उपन्यासकार ने पूर्वदीप्ति का प्रयोग भी किया है– "महीप की याद आते ही प्रतिमा क्षण–भर में अतीत की उस निराली और प्रत्यक्ष से भी अधिक यथार्थ दुनिया में खो गयी, जहाँ अपनी प्रारम्भिक जवानी के दिनों में अपनी अदम्य आत्मा के अप्रतिहत उत्साह के बल पर उसने सारे संसार की विरोधी शक्तियों को नगण्य मानकर उनसे अकेले जूझने का दम भरा था।"[1] नकुलेश का संदेहशील व्यवहार भी कथासूत्र को आगे बढ़ाता है। उसके सन्देहशीलता के कारण ही चित्रा आत्महत्या कर लेती है।

'भूत का भविष्य' में समाज द्वारा उपेक्षित एक निम्न जाति के नवयुवक के असाधारण आचरण से उत्पन्न असाधारण परिस्थितियों और घटनाओं द्वारा कथा का विकास किया गया है। समाज की उपेक्षा और प्रताड़ना के कारण भूतनाथ के अन्दर सभी लोगों के प्रति घृणा की भावना विद्यमान है। इसलिए वह मकान में आने वाले किरायेदारों को अपनी भूतहा हरकतों से भगा देता है। कथा का विकास वैचित्र्यपूर्ण वातावरण में हुआ है। भूतनाथ के अन्दर स्थित प्रतिशोध की भावना द्वारा कथा आगे बढ़ती है। वह राकेश से कहता है– "मेरे समान संवदेनशील अछूता अब अधिक समय तक तुम जैसे तथाकथित ब्राह्मणों की

1 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 259

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

घृणा, अवज्ञा और अवमानना अधिक समय तक चुपचाप सहते रहते नहीं पाये जायेंगे।"[1]

अपनी हीन दशा के लिए वह अपने आप को ही दोषी मानता है– "अपनी हालत के लिए सवर्णों या देश के नेताओं या सरकार को दोष देने के बजाय अगर सब अपने भीतर गहराई से देखें तो पता चलेगा कि हमी लोग अपने अछूतपन को कायम बनाये रखने के लिए दोषी ठहरते हैं।"[2] असाधारण घटनाएँ भी कथासूत्र को आगे बढ़ाने में सहायक हुई हैं।

कथा का उपसंहार : जोशी जी के अधिकांश उपन्यासों का अन्त अत्यधिक पश्चातापपूर्ण वातावरण में हुआ है। उन्होंने मानसिक कुण्ठाओं का चित्रण करने के पश्चात अंत में पश्चातापपूर्ण उपसंहार द्वारा उनका परिष्कार किया है। 'लज्जा' उपन्यास में राजू की आत्महत्या व पिता की मृत्यु के बाद उत्पन्न पश्चाताप व अवसादपूर्ण स्थिति में कथा का अंत हुआ है। राजू की डायरी पढ़ने के बाद लज्जा डॉ. कन्हैयालाल के प्रति घृणा की भावना से भर जाती है और पश्चाताप की अग्नि में जलने लगती है– "मेरा व्रत भ्रष्ट हो गया था। अब मेरा जीना भी व्यर्थ था और मरना भी। मैं केवल आकुल होकर भगवान से प्रश्न करने लगी– दयामय मुझे बता दो कि मैंने पूर्व जन्म में स्वाभाविक नियमों का पालन करके नारी का जीवन पूर्ण रूप से बिताया या नहीं? अथवा वर्तमान जीवन की तरह सभी पूर्व जीवन भी अर्थहीन और लक्ष्य–भ्रष्ट होकर व्यर्थता के गहन गह्वर में विलीन–विलीन हो गए।"[3]

'संन्यासी' उपन्यास में नन्दकिशोर के जीवन की त्रासदपूर्ण घटना का वर्णन है। इसका अन्त 'लज्जा' से भी दुःखद वातावरण में हुआ है। शान्ति के चले जाने और जयंती से विवाह करने के कुछ समय बाद जयंती आत्महत्या कर

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 97

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 146

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 167

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

लेती है। इसके बाद नन्दकिशोर व शान्ति का पुनर्मिलन होता है और शान्ति अपने बच्चे को छोड़कर अज्ञातवास को चली जाती है। नन्दकिशोर पश्चाताप के कारण संन्यासी बन जाता है। "जेल से छूटने पर अपने संन्यासी और नेतागिरी के ढोंग पर हँसी भी आई और दुःख भी हुआ। मैंने दाढ़ी फिर घुटा ली है, और बाल कटवा डाले हैं। गेरूवा वस्त्र पहनना भी छोड़ दिया है, अब मैं न संन्यासी हूँ न 'नेता' लल्लन को देखने देहरादून गया था, मौसी के पास रहकर वह बड़ा सुखी है। वह न शान्ति के अभाव का अनुभव कर रहा है न मेरे, पर मैं उन दोनों के अभाव का अनुभव कर रहा हूँ और सम्भवतः जीवनभर करता रहूँगा।"[1]

'पर्दे की रानी' उपन्यास में कथा भी इन्द्रमोहन की आत्महत्या से दुःखान्त स्थित में पहुँच जाती है, लेकिन उपन्यासकार ने निरंजना के गुरू द्वारा आत्मोत्थान करने से उपन्यास का अन्त किया है। उसका गुरू अन्त में निरंजना के मनोग्रन्थियों का परिष्कार कर निरंजना से इन्द्रमोहन का गर्भ धारण किये रखने को कहता है। उपन्यास 'गुरूजी' के इस कथन से समाप्त होता है– "नीरा, तुम्हारी प्रकृति के वाह्य स्तरों के नीचे तुम्हारा जो वास्तविक व्यक्तित्व दबा पड़ा है, उसके प्रति मेरे मन में प्रारम्भ से ही एक सम्मान का भाव रहा है।..... .माता बनने की जिस संभावना को तुम चरम दुर्गति समझे बैठी हो वही तुम्हारे जीवन का सबसे बड़ा वरदान सिद्ध हो सकती है।.....आज तक तुम्हारा जीवन घृणा प्रतिहिंसा और हत्या के वातावरण से घिरा रहा है, अब चूँकि तुम माता बनने जा रही हो, इसीलिए अब से स्नेह, प्रेम और कल्याण की भावनाएँ तुम्हारे जीवन के चारों ओर मंगल वितान तान सा आरम्भ कर देगी–यह मेरा आन्तरिक विश्वास और आशीर्वाद है।"[2] 'प्रेत और छाया' उपन्यास के अन्त में पारसनाथ की कुण्ठा दूर हो जाती है। ग्रन्थि के दूर होने के पश्चात वह हीरा से विवाह कर मंजरी जो कि डॉक्टर बन जाती है, क्षमा माँग लेता है और भुजौरियाजी से भी क्षमा माँगने के लिए नन्दिनी के पास चला जाता है।

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 224

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 224

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'लज्जा' उपन्यास की तरह ही 'निर्वासित' उपन्यास का अन्त भी दुःखदपूर्ण वातावरण में हुआ है। प्रेम की अन्तर्वेदना से पीड़ित महीप का अन्त बड़े ही दुःखपूर्ण अवस्था में होता है, अन्त समय में वह जेल में राजनीतिक बन्दी के रूप में रहता है और बड़ा कष्टपूर्ण जीवन जीता है। अन्त में जेल में ही उसकी मृत्यु हो जाती है– "नीलिमा ठहरो मैं आता हूँ.....और उसके बाद ही उसका श्वास ऊपर चढ़ने लगा। नर्स घबराकर डॉक्टर को बुला लाई। पर तब तक सब कुछ समाप्त हो चुका था। इस घटना के दूसरे ही दिन संवादपत्रों में यह समाचार छपा कि कांग्रेसी मंत्रिमंडल स्थापित हो चुका है और कांग्रेस का पहला काम समस्त राजनीतिक बन्दियों को मुक्त करने का होगा।"[1]

'मुक्तिपथ' उपन्यास का अन्त पश्चातापपूर्ण स्थिति में होते हुए भी सुखपूर्ण हुआ है। उपन्यास का नायक राजीव अपनी गलती पर पश्चाताप करता है। अढ़ाई वर्ष तक साथ–साथ काम करने से सुनन्दा उकता जाती है। वह राजीव के कुछ समय विश्राम कर अपने व्यक्तिगत सुख–दुःख की भावनाओं में मग्न होने को कहती है। लेकिन राजीव द्वारा उसकी अवहेलना किये जाने पर वह राजीव को छोड़कर चली जाती है। राजीव अपनी गलती पर पश्चाताप करता है। उपन्यास का अन्त सुनन्दा के इस कथन से होता है– "राजीव बाबू! आपको क्या हो गया! आपको क्या हो गया, छी–छी! इतनी दुबर्लता का प्रदर्शन करते आपको लज्जा नहीं मालूम होती? जाइये, निवेश के निवासियों के बीच में तमाशा खड़ा न कीजिये। आपकी महायोजना के महापथ को रोकने की शक्ति हजारों सुनन्दाओं में भी नहीं है। यह आप भी जानते हैं और मैं भी। इसलिए जाइए और अपना प्रतिदिन का कार्यक्रम पूरा कीजिये! कहकर सुनन्दा द्रुत पगों से आगे को बढ़ती चली गई। राजीव पाषाण मूर्ति की तरह जहाँ का तहाँ खड़ा

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 422

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

रहा और प्रमीला भित्ति–चित्र की मौन और निश्चल अवस्था में सुनन्दा के बढ़ते हुए कदमों की ओर देखती रही।"[1]

'सुबह के भूले' उपन्यास की कथा का अन्त सुखद हुआ है। गुलबिया को अपनी गलती का अहसास होता है और वह गिरिजा से पुनः पुरानी गुलबिया बन जाती है। वह अपनी माता झमिया की स्मृति में मातृ–मन्दिर का निर्माण करती है और उसमें झमिया का चित्र लगाकर किशन से उसका उद्घाटन करवाती है। "महावीर विस्मित, पुलकोच्छवसित आँखों से उस चित्र की ओर देखता रह गया। धीरे–धीरे उसकी आँखों की हर्ष–विह्वल दृष्टि में उन आँसुओं से कोई अन्तर नहीं पड़ा। कुछ देर तक वह उसी निश्चय और रोमांचित भाव से झमिया की उस सजीव सी लगने वाली प्रतिमा की ओर निहारता रहा। उसके बाद धीरे–धीरे चित्र के एकदम निकट जाकर उसने आले पर चित्र के ठीक नीचे अपना माथा टेक दिया।"[2]

'त्याग का भोग' उपन्यास का अन्त भी लेखक ने सुखदपूर्ण वातावरण में किया है। 'त्याग का भोग' का नायक रंजन को अन्त में परिवर्तित होते दिखाया है। मनिया के चेहरे पर तेजाब गिरने से मनिया कुरूप हो जाती है, तो रंजन भी उसकी ओर ध्यान देना कम कर देता है। धीरे–धीरे रंजन शोभना की ओर आकर्षित होने लगता है। मनिया कन्हाईलाल के सम्पर्क में आकर विदेश जाकर अपने चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करवाती है और जब महामारी फैलती है तो वह मंजरी के नये रूप में नर्स बनकर आती है। प्रारम्भ में रंजन उसकी ओर आकर्षित होता है, लेकिन बाद में हकीकत जानने के बाद वह मंजरी से माफी माँगता है।

'जहाज का पंछी' उपन्यास में लीला द्वारा अपनी सारी सम्पति सेवाकार्य में दान देने और नायक द्वारा लीला के साथ कलकत्ता चले जाने की घटना से

---

1 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 300

2 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 217

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कथा का अन्त होता है। अन्त में स्वामी जी के इस कथन से उपन्यास का अन्त होता है। "तुम भी दुनिया के कहने सुनने पर विचार करने लगे?" एक म्लान मुस्कान मुख पर झलकाते हुए स्वामी जी बोले– "मानता हूँ कि दुनिया वालों की उँगली उठाने की शक्ति कितनी बड़ी है! पर भले आदमी, कुछ यह क्यों नहीं सोचते कि लीला अब धनी नारी कहाँ रह गई? अपना सर्वस्व पीड़ितों की सेवा में अर्पित करके वह क्या उन अभागियों के साथ एक प्राण नहीं हो गई, उनके वर्ग के समान स्तर पर, बल्कि उससे भी नीचे नहीं उतर आई, जिनकी पीड़ा तुम्हें इतने दिन से पागल बनाती आई है? जाओ! कायरता त्यागो। बिना तनिक भी दुविधा के लीला का साथ दो?" "और आप? आप क्या नहीं चलेंगे?" "मैं भी समय पर अपने आप पहुँच जाऊँगा। जाओ, देर न करो!" मेरी पीठ पर स्नेह भरा हाथ फेरते हुए स्वामी जी बोले। दूसरे दिन मैं लीला के साथ कलकत्ते के लिए रवाना हो गया।"[1]

'ऋतुचक्र' उपन्यास का अन्त सुखपूर्ण वातावरण में हुआ है। कथा के अन्त में दादा और प्रतिमा का विवाह निश्चित हो जाता है। उधर रामबाबू के वार्तालाप के साथ ही कथा का समापन होता है– "दादा दरवाजे तक उन्हें पहुँचा आये और लौटकर फिर कौच पर अकेले के अकेले ही बैठे रह गये। जेब से धीरे से एक सिगार निकाल कर सुलगाने लगे और फिर आराम से धुआँ उड़ाते हुए सामने खिड़की के शीशों पर जुगुनुओं की तरह जगमगाती हुई पीली–पीली, तश्च–चंचल बूँदों पर बहुत देर तक आँखे गड़ाये ही रहे।"[2]

'भूत का भविष्य' उपन्यास का अन्त दुःखान्त वातावरण में हुआ है। भूतनाथ तो पकड़ा नहीं जाता है। उल्टा राकेश ही उस केस में फँस जाता है। भूतनाथ के गायब होने के बाद पुलिस राकेश को भूतनाथ के साथ मिले होने के

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 405–406

2 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 564

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सन्देह के आधार पर पकड़ ले जाती है। उधर सुनन्दा गंगा में डूबने के इरादे से हरिद्वार वाली बस में बैठ जाती है।

इस प्रकार जोशी जी ने अपने उपन्यासों में अन्त में किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति का ध्यान रखा है। कथा के अन्त में उन्होंने अपने पात्रों की विभिन्न मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं का परिष्कार किया है। उन्होंने पश्चातापपूर्ण वाले कथानकों का अन्त भी सुखपूर्ण वातावरण में करने का प्रयास किया है। जहाँ पर पात्रों के मनोविकारों और आत्मोन्नति पर विजय को चित्रित किया है, वहाँ कथानक का अन्त पश्चातापपूर्ण वातावरण में होते हुए भी उपसंहार सुखपूर्वक किया है। लेकिन जहाँ पर मनोविकारों की बीभत्सता का चित्रण है वहाँ कथानक का अंत पश्चातापपूर्ण एवं दुःखपूर्ण वातावरण में किया है।

❖❖❖❖

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/